Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 7, September-2018, ISSN 2230-7540

राजस्थान में खनिज संसाधनों का भौगोलिक अध्ययन

Dr. Jagphool Meena*

Lecturer, Department of Geography, Government Post-Graduation College, Rajgarh, Alwar, Rajasthan

शोध पत्र सारांश:- *यह शोध पत्र राजस्थान में खनिज संसाधनों के भौगोलिक अध्ययन से संबंधित है। इस शोध पत्र में हम राजस्थान के खनिज संसाधनों के बारे में अध्ययन करेंगे। ये संसाधन खनिज और ऊर्जा हैं। जैसे पानी और जमीन पृथ्वी पर बहुत महत्वपूर्ण खजाने हैं, वैसे ही महत्वपूर्ण खनिज संसाधन भी हैं। खनिज संसाधनों के बिना, हम अपने देश की औद्योगिक गतिविधियों को गति, रणनीति और दिशा नहीं दे सकते। इसलिए देश का आर्थिक विकास भी अवरुद्ध हो सकता है। खनिज संपदा दुनिया के कई देशों में राष्ट्रीय आय का एक प्रमुख स्रोत है। किसी देश की आर्थिक, सामाजिक प्रगति उसके प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग करने की क्षमता पर निर्भर करती है। राजस्थान एक खनिज समृद्ध राज्य है। राजस्थान को "खनिजों का संग्रहालय" कहा जाता है। राजस्थान में लगभग 67 (44 हेड+23 माइनर) खनिजों का खनन किया जाता है। देश के कुल खनिज उत्पादन में राजस्थान का 22 प्रतिशत योगदान है। झारखंड के बाद, खनिज जमा के मामले में एक और स्थान है। खनिज उत्पादन के कारण झारखंड राजस्थान के बाद तीसरा स्थान है। खनिज उत्पादन मूल्य के मामले में झारखंड, मध्य प्रदेश, गुजरात, असम के बाद राजस्थान का पांचवा स्थान है। राजस्थान में देश का सबसे अधिक भोजन होता है। राजस्थान के खनिजों में राजस्थान प्रथम है, भारत लौह खनिजों में चैथे स्थान पर है। राजस्थान में पहली संगमरमर नीति अक्टूबर 1994 में घोषित की गई थी। और पहली ग्रेनाइट नीति 1991 में घोषित की गई थी, राजस्थान की नवीनतम संगमरमर नीति और ग्रेनाइट नीति 8 जनवरी 2002 को घोषित की गई थी, राजस्थान के खनिज विभाग ने 15 अगस्त 1999 को घोषणा की थी, वह भी वर्ष 2020। राजस्थान स्टेट माइंस एंड मिनरल्स लिमिटेड की स्थापना 2003 में की गई थी। राजस्थान में नई खनन नीति को राज्य मंत्रिमंडल द्वारा 28 जनवरी 2011 को मंजूरी दी गई थी। राजस्थान में खनन किए गए मुख्य खनिज संसाधनों का अध्ययन प्रस्तुत शोध पत्र में किया गया है।*

शब्द कुंजीः - राजस्थान के खनिज संसाधन, राजस्थान की खानें और खनिज संपदा, राजस्थान में खनिज विकास, महत्वपूर्ण तथ्य और निष्कर्ष

----------X----------

परिचय:-

इस शोध पत्र में हम राजस्थान के खनिज संसाधनों के बारे में अध्ययन करेंगे। ये संसाधन खनिज और ऊर्जा हैं। जैसे पानी और जमीन पृथ्वी पर बहुत महत्वपूर्ण खजाने हैं, वैसे ही महत्वपूर्ण खनिज संसाधन भी हैं। खनिज संसाधनों के बिना, हम अपने देश की औद्योगिक गतिविधियों को गति, रणनीति और दिशा नहीं दे सकते। इसलिए देश का आर्थिक विकास भी अवरुद्ध हो सकता है। खनिज संपदा दुनिया के कई देशों में राष्ट्रीय आय का एक प्रमुख स्रोत है। किसी देश की आर्थिक, सामाजिक प्रगति उसके प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग करने की क्षमता पर निर्भर करती है। खनिजों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वे उपयोग में आने के बाद लगभग समाप्त हो जाते हैं। यह हमारे वर्तमान और भविष्य के कल्याण से संबंधित है। चूंकि खनिज अवक्रमण योग्य संसाधन हैं जिन्हें फिर से नवीनीकृत नहीं किया जा सकता है, उनके संरक्षण की आवश्यकता बहुत अधिक है। राजस्थान में अमूल खनिज भंडार है। राजस्थान प्रमुख खनिज संसाधनों से संपन्न राज्य है और इसलिए इसे खनिजों के संग्रहालय के रूप में भी जाना जाता है। राजस्थान में देश की कुल खनिज संपदा का 22þ है। खनिज उत्पादन के मामले में मध्यप्रदेश के बाद झारखंड का राजस्थान में तीसरा स्थान है। खनिज जमा के मामले में झारखंड के बाद राजस्थान का दूसरा स्थान आता है। राजस्थान में सबसे अधिक उपलब्ध खनिज रॉक फॉस्फेट है, राजस्थान में लगभग 67 खनिजों का खनन होता है। राजस्थान में मकराना का संगमरमर विश्व प्रसिद्ध है, जिसका उपयोग ताज महल (आगरा) और विक्टोरिया मेमोरियल (कोलकाता) के निर्माण में किया गया है। राजस्थान में हीरा केसरपुरा (प्रतापगढ़) वह स्थान है जहाँ भारत का सबसे अधिक जस्ता जस्ता राजस्थान में पाया जाता है। है। तमारा उत्पादन में राजस्थान का एकाधिकार है। राजस्थान में पहली

संगमरमर नीति अक्टूबर 1994 में घोषित की गई थी। और पहली ग्रेनाइट नीति 1991 में घोषित की गई थी, राजस्थान की नवीनतम संगमरमर नीति और ग्रेनाइट नीति 8 जनवरी 2002 को घोषित की गई थी, राजस्थान के खनिज विभाग ने 15 अगस्त 1999 को घोषणा की थी, वह भी वर्ष 2020। राजस्थान स्टेट माइंस एंड मिनरल्स लिमिटेड की स्थापना 2003 में हुई थी। राजस्थान में नई खनन नीति को राज्य मंत्रिमंडल ने 28 जनवरी 2011 को मंजूरी दी थी।

राजस्थान की भौगौलिक स्थिति:-

अध्ययन क्षेत्र राजस्थान की स्थिति 23'3' उतरी अक्षांश से 30'12' उतरी अक्षांश (अक्षांशीय विस्तार 7'9') तथा 69'30' पूर्वी देशान्तर से 78'17' पूर्वी देशान्तर (विस्तार 8'47) के मध्य स्थित राजस्थान का अधिकांश भाग कर्क रेखा (231/2' कर्क रेखा अर्थात 23 0 30' उतरी अक्षांश रेखा के उतर में स्थित है। कर्क रेखा राज्य में डूंगरपुर जिले की दक्षिणी सीमा से होती हुई बाँसवाड़ा जिले के लगभग मध्य से गुजरती हैं। बाँसवाड़ा शहर कर्क रेखा से राज्य का सर्वाधिक नजदीक स्थित शहर है। जलवायु की दृष्टि से राज्य का अधिकांश भाग उपोष्ण या शीतोष्ण कटिबन्ध में स्थित है।

विस्तार:-

उत्तर से दक्षिण तक लम्बाई 826 कि. मी. व विस्तार उत्तर में कोणा गाँव (गंगानगर) से दक्षिण में बोरकुण्ड गाँव (कुशलगढ़, बांसवाड़ा) तक है।

पूर्व से पश्चिम तक चैड़ाई 869 कि. मी. व विस्तार पूर्व में सिलाना गाँव (राजाखेड़ा, धौलपुर) से पश्चिम में कटरा (फतेहगढ़,सम, जैसलमेर) तक है।

उद्देश्य:-

प्रस्तुत शोध पत्र के उद्देश्य इस प्रकार हैं।

1. राजस्थान में खनिजों के वर्तमान स्वरूप का अध्ययन किया गया है।
2. राजस्थान के खनिजों की विशेषताओं को स्पष्ट किया गया है।
3. राजस्थान में खनिजों के महत्व को समझाया गया है।
4. राजस्थान में खनिज विकास हेतु किए गए प्रयासों को स्पष्ट किया गया है।

परिकल्पना:

1. वर्तमान में राजस्थान में खनिजों के खनन में निरन्तर वृद्धि हो रही है।
2. वर्तमान में सरकार द्वारा खनिजों के विकास एवं संरक्षण हेतु प्रयास किए जा रहे हैं।

अध्ययन विधि:

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक आकड़ो का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़ो का संकलन प्रश्नावली, साक्षात्कार, अनुसूची एवं व्यक्तिगत सम्पर्क से किया गया है। द्वितीयक आँकड़ो के संकलन डायरी, पत्र पत्रिकाओं, समाचार पत्र, राजस्थान खनिज निगम, पर्यावरण एवं खान विभाग, राजस्थान सरकार एवं विभिन्न वेबसाइट एवं पुस्तकों के माध्यम से किया गया है। इस अध्ययन की प्रकृति विवरणात्मक है।

www.ignited.in

राजस्थान के खनिज संसाधनः

राजस्थान एक खनिज समृद्ध राज्य है। राजस्थान को "खनिजों का संग्रहालय" कहा जाता है। राजस्थान में लगभग 67 (44 हेड + 23 माइनर) खनिजों का खनन किया जाता है। देश के कुल खनिज उत्पादन में राजस्थान का 22 प्रतिशत योगदान है। झारखंड के बाद, खनिज जमा के मामले में एक और स्थान है। खनिज उत्पादन में कमी के कारण मध्य प्रदेश के बाद झारखंड का राजस्थान में तीसरा स्थान है। खनिज उत्पादन मूल्य के मामले में झारखंड, मध्य प्रदेश, गुजरात, असम के बाद राजस्थान का पांचवा स्थान है। राजस्थान में देश का सबसे अधिक भोजन होता है। राजस्थान भारत में लौह खनिजों में चैथे स्थान पर पहले स्थान पर है। राजस्थान में सबसे अधिक उपलब्ध खनिज रॉक फॉस्फेट है। राजस्थान एकमात्र राज्य है जो जैस्पर, बुलस्टोन और गारनेट सभी का उत्पादन करता है। राजस्थान में सीसा जस्ता, जिप्सम, चांदी, संगमरमर, अभ्रक, रॉक फॉस्फेट, इमली, पन्ना, जैस्पर, फायरक्ले, कैडमियम का एकाधिकार है। चूना पत्थर, टंगस्टन, अभ्रक, तांबा, फेल्सपार, लकड़ी में भारत में राजस्थान का महत्वपूर्ण स्थान है।

राजस्थान के खान और खनिज संपदाः -

राजस्थान में, भौतिक दृष्टि से, तीन मारू, मेरु और माल भू-आकृतियों का विशेष महत्व है। राजस्थान में अरावली क्षेत्र खनिज संसाधनों के मामले में समृद्ध है। गैर-धातु खनिजों और शक्ति के स्रोत पश्चिमी राजस्थान में पाए जाते हैं। पूर्वी राजस्थान में खनिज की कमी पाई जाती है। खान के मामले में राजस्थान पहले स्थान पर है। राजस्थान में सर्वाधिक 79 प्रकार के खनिज पाए जाते हैं। जिसमें 44 प्रकार के बड़े खनिज और 23 प्रकार के लघु खनिज और 12 अन्य छोटे खनिज पाए जाते हैं, इसलिए राजस्थान को खनिजों का संग्रहालय कहा जाता है। खनिज उत्पादन के मामले में राजस्थान भारत का तीसरा सबसे बड़ा राज्य है। (झारखंड और मध्य प्रदेश के बाद) खनिज संपदा के मामले में झारखंड के बाद राजस्थान का भारत में दूसरा स्थान है। खनिजों से आय के संदर्भ में, पांचवें स्थान पर गैर-लौह खनिज उत्पादन मूल्य में है और गैर-लौह उत्पादन में पहले स्थान पर है। देश के कुल खनिज उत्पादन में राज्य की हिस्सेदारी 22 प्रतिशत है। देश के कुल खनिजों में देश का 15þ धात्विक, 25þ अधात्विक और 26þ गौण खनिज है। धात्विक और अधात्विक खनिज राजस्थान में पाए जाते हैं, लेकिन धात्विक खनिजों की कमी है। नागौर जिले में डेगाना (भाखरी) में एशिया की सबसे बड़ी टंगस्टन खदान है। राजस्थान के झुंझुनू को भारत का तांबा जिला कहा जाता है। राजस्थान के मकराना का संगमरमर (कैलिसिटिक प्रकार) विश्व प्रसिद्ध है। जिसका उपयोग ताज महल (आगरा) और 'विक्टोरिया मेमोरियल' (कोलकाता) के निर्माण में किया गया है। राजस्थान में हीरा केसरपुरा (प्रतापगढ़) है, लेकिन वहां संभावनाएं व्यक्त की गई हैं। भारत की सबसे बड़ी खान रॉक फॉस्फेट झामर कोटरा (उदयपुर) में है। भारत में सबसे अधिक सस्ता राजस्थान में पाया जाता है, राजस्थान में काला संगमरमर जयपुर भैंसलाना में पाया जाता है। तमदा उत्पादन में राजस्थान का एकाधिकार है। इसे 'लालमणि' के नाम से जाना जाता है और तमरा उत्पादन में 'रक्तामणि' का राजस्थान में टोंक जिले में पहला स्थान है। राजस्थान के नागौर को राज्य का धातु शहर कहा जाता है। कपसन, चित्तौड़गढ़, कोटपुर डूंगरपुर, उदयपुर, खिवसर, नागौर में अंजनी खेड़ा में चूना पत्थर की एक विस्तृत पट्टी का अनुमान लगाया गया है। राज्य में पाइराइट की एकमात्र खदान सलादीपुर (सीकर) है। बीकानेर जिले के लूणकरनसर में जैतून की रिफाइनरी स्थापित की जाती है। यह राजस्थान ओलिव कल्टीवेशन लिमिटेड द्वारा उत्पादित की जाने वाली देश की पहली रिफाइनरी है। राजस्थान जैतून का तेल उत्पादन करने वाला देश का पहला राज्य है। सिरोही में चंद्रावती में खुदाई के दौरान पाए जाने वाले लाजवर्त पत्थर, यह पत्थर अफगानिस्तान में हिंदू कुश के पास बड़क शाह की पहाड़ियों में पाया जाता है, यह अफगानिस्तान और चंद्रवती के बीच व्यापार को इंगित करता है। केयर्न इंडिया का दावा है कि गुड़ामालानी सांचोर में 1 ट्रिलियन क्यूबिक फीट गैस भंडार पाया गया है। बीकानेर जिले की खाजूवाला तहसील के आनंदगढ़ और फरीदसर इलाके में जिप्सम परत पाई गई है। फरवरी 2007 में बांसवाड़ा जिले के जगपुरा में ऑस्ट्रेलियाई कंपनी इंडो गोल्ड ने 85 मिलियन टन सोने के भंडार की खोज की। राजस्थान के प्रमुख खनिज संसाधन इस प्रकार हैं।

www.ignited.in

1. लीड-जस्ताः

सीसा और जस्ता मिश्रित अयस्कों की उत्पत्ति गैलेना से होती है। इसके अलावा कैलेमाइन, जिंकाइट, विलेमाइट मुख्य अयस्क हैं। उदयपुर में जावर खदान देश की सबसे बड़ी खदान है जिसमें सीसा जस्ता और चाँदी है। अन्य उत्पादक जिले भीलवाड़ा, अगुचा, राजसमंद में राजपुरा-दरीबा, सवाई माधोपुर में चैथ का बरवाड़ा हैं।

2. तांबाः

झारखंड के बाद तांबा उत्पादन में राजस्थान का दूसरा स्थान है। खेतड़ी-सिंघाना (जिला झुंझुनू) तांबे के देश की सबसे बड़ी खदान है। यहाँ, भारत सरकार उद्यम हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड स्थित है। राजस्थान में तांबे के अन्य उत्पादक क्षेत्र अलवर, प्रतापगढ़ और देलवाड़ा में सिरोही, केरावली में खो-दरीबा हैं। कॉपर को पिघलाकर सल्फ्यूरिक एसिड को एक उत्पाद के रूप में प्राप्त किया जाता है। सुपर-फॉस्फेट के निर्माण में उपयोग किया जाता है।

3. टंगस्टनः

टंगस्टन ऊनफ्रेमाइट अयस्क से प्राप्त होता है। यह नागौर के डेगाना भकारी गाँव (रेवत पहाड़ी) में निर्मित होता है। टंगस्टन के अन्य उत्पादक क्षेत्र पाली में सिरोही, आबूरोड और नाना करब में बलदा हैं। राजस्थान राज्य टंगस्टन विकास निगम द्वारा बलौदा, सिरोही में खनन कार्य किया जा रहा है।

4. मैंगनीजः

सिलोमेलिन, ब्रोनाइट, पायरोलुसाइट, मैंगनीज के मुख्य अयस्कों। बांसवाड़ा राजस्थान का सबसे अधिक क़ीमती जिला है। यहां मैगनीज का उत्पादन लिलवाना, तलवाड़ा, सागवा, तमसर, कलाबुता में किया जाता है। राजस्थान में अन्य उत्पादक क्षेत्र उदयपुर में देबारी, राजसमंद में स्वरूपपुरा, नगाडिया और नाथद्वारा हैं।

5. लौह अयस्कः

हेमेटाइट, मैग्नेटाइट, लिमोनाइट मुख्य अयस्कों हैं। हेमटाइट किस्म का लोहा राजस्थान में पाया जाता है। जयपुर राजस्थान का सबसे बड़ा मंजिला जिला है। प्रमुख लौह अयस्क उत्पादन क्षेत्र मोरिजा बानोल, चैमू और रामपुरा आदि हैं। लौह अयस्क के अन्य उत्पादक क्षेत्रों में उदयपुर में नाथरा का पाल, दौसा में थुर-हुंदारे, नीमला रायसेला, अलवर में राजगढ़, पुरवा में डबला-सिंघाना और झुंझुनू शामिल हैं।

6. रॉक फॉस्फेटः

देश का 90 प्रतिशत रॉक फॉस्फेट राजस्थान में पाया जाता है। इस सुपर फास्फेट का उपयोग खाद और लवणीय मिट्टी के उपचार में किया जाता है। उदयपुर रॉक फॉस्फेट का सबसे बड़ा उत्पादक है, जिसमें झामर कोटरा, नीमच माता, बैलागढ़, कानपुरा, सिसारमा, भिंडर प्रमुख हैं। अन्य उत्पादक क्षेत्र जैसलमेर में बिरमानिया, लाठी, सीकर में कानपुरा, बांसवाड़ा में सालोपत हैं। त्ैडक्ब् द्वारा श्रडड-ज्ञवजकं द्वारा एक रॉक फॉस्फेट लाभकारी संयंत्र स्थापित किया गया है। फ्रांस की सोफरा मैनिस ने एक रॉक फॉस्फेट ट्रीटमेंट प्लांट स्थापित करने की सूचना दी है।

7. चूना पत्थरः

इसका उपयोग सीमेंट उद्योग, इस्पात और चीनी शोधन में किया जाता है। यह राजस्थान में पाया जाने वाला सर्वव्यापी खनिज है। चूना पत्थर तीन प्रकार के होते हैं।

केमिकल ग्रेड - जोधपुर, नागौर

स्टील ग्रेड - सानू (जैसलमेर), उदयपुर

सीमेंट ग्रेड - चित्तौड़गढ़, नागौर, बूंदी, बांसवाड़ा, कोटा, झालावाड़

अलवर में सबसे अधिक उत्पादन राजगढ़, थानागाजी और चित्तौड़गढ़ में भैंसरोडगढ़, निंबोहेरा, मांगरोल, शंभूपुरा में होता है। इसके अन्य उत्पादक क्षेत्र बूंदी, लांदेरी, उदयपुर, दरौली, उदयपुर में भदौरिया, जैसलमेर - सानू, रामगढ़, नागौर में गोटन, जोधपुर में मुडवा और बिलाड़ा हैं।

www.ignited.in

8. अभ्रकः

राजस्थान झारखंड, आंध्र प्रदेश के बाद अभ्रक का तीसरा स्थान है। गैग्नेटाइट, पिगमेटाइट इसके दो मुख्य अयस्कों हैं। सफेद अभ्रक को रूबी अभ्रक, गुलाबी अभ्रक को बायोटाइट कहा जाता है। अभ्रक पाउडर के साथ चादरें बनाना माईनाइट कहलाता है। भीलवाड़ा में अभ्रक की ईंट बनाई जाती है। भीलवाड़ा में सबसे अधिक अभ्रक उत्पादन होता है, दांता, तुनका, फूलिया, शाहपुरा और प्रतापपुरा मुख्य हैं। अभ्रक के अन्य उत्पादक क्षेत्र चंपागुढ़ा, सरवरगढ़, भगतपुरा और उदयपुर में एक छोटी राशि, जयपुर, बूंदी, सीकर और डूंगरपुर में भी पाए जाते हैं।

9. जिप्समः

जिप्सम को सेलरवाड़ी, हरसाउंड और खड़िया मिट्टी भी कहा जाता है। जिप्सम के ठंडा रूप को सेलेनिट कहा जाता है। नागौर में अधिकतम उत्पादन होता है जिसमें भदवासी, मंगलोद, धनकोरिया प्रमुख हैं। अन्य उत्पादक क्षेत्रों में जामसर (देश की सबसे बड़ी खान), बीकानेर में पुगल, बिसरासर, हरकसर, जैसलमेर में मोहनगढ़, चंदन, मखाना, गंगानगर में सूरतगढ़, तिलैया में किशनपुरा और हनुमानगढ़, पुरबासर शामिल हैं।

10. अभ्रकः

देश में 90 प्रतिशत राजस्थान में एस्बेस्टस पाया जाता है। अभ्रक को रॉक वूल और खनिज रेशम के रूप में भी जाना जाता है। इसका उपयोग सीमेंट शीट, पाइप, टाइल, बॉयलर के निर्माण में किया जाता है। अभ्रक के दो प्रकार के उभयचर और क्राइसोलिट हैं। राजस्थान में उभयचर किस्म पाई जाती है। उदयपुर में ऋषभदेव, खेरवाड़ा, सलूम्बर सबसे अधिक उत्पादित होते हैं। अन्य उत्पादक क्षेत्र राजसमंद में नाथद्वारा और देवघर, देवल, बेमारू, जकोल में पिपराडा हैं।

11. बल्बस्टाइटः

यह केवल राजस्थान में खनन किया जाता है। इसका उपयोग पेंट, पेपर और सिरेमिक उद्योगों में किया जाता है। सिरोही में मुख्य उत्पादन ख्याला, बैतका में होता है। अन्य उत्पादक क्षेत्र अजमेर में रूपगढ़, पिसागाँव, उदयपुर में खेड़ा, डूंगरपुर में सायरा और बोदकिया हैं।

11. बेंटोनाइटः -

इसका उपयोग सिरेमिक बर्तनों, सौंदर्य प्रसाधन और वनस्पति तेलों पर पॉलिश करने में किया जाता है। पानी में भीगने पर यह सूज जाता है। इसके उत्पादक क्षेत्रों में, बाड़मेर में हाथी धानी, गिरल, अकाली का सर्वाधिक उत्पादन होता है। अन्य उत्पादन क्षेत्र बीकानेर और सवाईमाधोपुर हैं।

12. फ्लोराइट या फ्लोरस्पारः

इसका उपयोग चीनी मिट्टी के बरतन, सफेद सीमेंट लोहे और एसिड उद्योगों में किया जाता है। यह अभ्रक के साथ एक उप-उत्पाद बन जाता है। डूंगरपुर में, मंडियों, काहिला का उत्पादन सबसे अधिक होता है। अन्य उत्पादक क्षेत्र जालौर, सीकर, सिरोही, अजमेर हैं। फूलपर बेनेफिशियल प्लांट (1956) मंडियों के पाल में स्थापित है।

13. पन्ना या हरी अग्नि या पन्ना या पन्नाः

उदयपुर में काला गुमान, तिखी, देवगढ़, राजसमंद में कांकरोली और अजमेर, राजगढ़ और बुबानी में गुड़ का उत्पादन किया जाता है। हाल ही में, यूके की खान प्रबंधन कंपनी ने बुबनी (अजमेर) से गामागुडा (राजसमंद) और नाथद्वारा के लिए ठीक-ठाक पृष्ठों की एक विशाल पट्टी का पता लगाया।

14. सिरेमिक

इसका उपयोग सिरेमिक और सिलिकेट उद्योगों में किया जाता है। उत्तर प्रदेश के बाद राजस्थान सिरेमिक उत्पादन में दूसरे स्थान पर है। चांदी, पलाना, बोताड़ी में बीकानेर का सबसे अधिक उत्पादन होता है। अन्य उत्पादक क्षेत्र उदयपुर में सवाईमाधोपुर, वसावा, पुरुषोत्तमपुरा, उदयपुर में तुषार और खोरा-बैरिया में रायसीना हैं। सिरेमिक वाशिंग फैक्ट्री नीम का थाना (सीकर) में है।

www.ignited.in

15. गार्नेट या तांबा या गार्नेट

गार्नेट केवल राजस्थान में उत्पादित किया जाता है। गार्नेट मणि और अपघर्षक दो प्रकार के होते हैं। यह टोंक, कल्याणपुरा में राजमहल, कमलपुरा में भीलवाड़ा, दादिया, बलिया-खेड़ा और अजमेर, बाराबारी में सरवर में उत्पादन किया जाता है।

16. ग्रेनाइट

राजस्थान देश का एकमात्र राज्य है जहाँ विभिन्न रंगों के ग्रेनाइट पाए जाते हैं। जालोर में सर्वाधिक ग्रेनाइट पाया जाता है। अन्य उत्पादक क्षेत्र हैं- पिंक - बाबरमल (जालोर), बुध लाल - सिवाना, गुंगेरिया (बाड़मेर), काला - कालाडेरा (जयपुर), बदनबाड़ा और शमालिया (अजमेर), पीला - पीतांबर ग्राम (जैसलमेर) और नवीनतम स्टोर - बाड़मेर, अजमेर, दौसा में मिलते हैं।

17. संगमारगर (संगमरमर):

भारत का 95 प्रतिशत संगमरमर राजस्थान में पाया जाता है। राजस्थान में कैल्सीटिक और डोलोमिटिक की दो किस्में पाई जाती हैं। राजसमंद संग्रामार के खनन में पहला स्थान रखता है। राजनगर, मोरवाड़, राजसमंद में मोरचाना, भगोरिया, सरदारगढ़ नाथद्वारा, केलवा का उत्पादन किया जाता है। साथ ही ऋषभदेव, दरौली, जसपुरा, देवीमाता, नागौर में मकराना, उदयपुर में कुमारी-डूंगरी, सेलवाड़ा शिवगंज में सेसिरा, सिरोही में भटाना, अलवर में खो-दरीबा, राजगढ़, बड़ामपुर, बांसवाड़ा में त्रिपुर-सुंदरी, कामतलाई, भीमकुंड, भीमकुंड में उत्पादन होता है। ऐसा होता है। राजसमंद सफ़ेद (कैलिसिटिक), मकराना, ग्रीन-ब्लैक - डूंगरपुर, कोटा, ब्लैक - भैंसलाना, लाल - धौलपुर, गुलाबी - भरतपुर, ग्रीन (सर्पेन्टाइन) - उदयपुर, लाइट ग्रीन - डूंगरपुर, बादामी - जोधुपर, येलो - जैसलमेर, व्हाइट स्फटिक - अलवर, लाल-पीली चित्तर - जैसलमेर, सात रंग - खंड्रा ग्राम (पाली), धारीदार - जैसलमेर, संगमरमर की मंडी - किशनगढ़, संगमरमर की मूर्तियां - जयपुर, संगमरमर की जाली - जैसलमेर।

18. रजतः

भारत का 90 प्रतिशत चांदी राजस्थान में निकाला जाता है। अर्जेंटीना, जाइराइट, सींग सिल्वर चांदी के मुख्य अयस्क हैं। सीसा और जस्ता के साथ चांदी निकलती है। चांदी अयस्क का खनन डंडू (बिहार) में किया जाता है।

19. सोनाः

आनंदपुर भुकिया में, जगपुर, तिमारन माता, संजेला, मानपुर, दगोचा, उदयपुर - रायपुर, खेतान, लाई, चित्तौड़गढ़ में खेड़ा गाँव, डूंगरपुर में चदर पाल, दौसा में अमजारा, बसारी, दौसा में नबावली, आनंदपुर भुकिया और राजस्थान के बांसवाड़ा में जगपुरा। हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड द्वारा खनन किया जा रहा है। हाल ही में अजमेर, अलवर, दौसा, सवाईमाधोपुर में नए स्वर्ण भंडार पाए गए हैं।

20. यूरेनियम

यूरेनियम एक आणविक खनिज है। पगेटामाइट्स, मोनोजाइट और चैरलाइट इसके मुख्य अयस्कों हैं। उमर उदयपुर में सबसे अधिक उत्पादन है। टोंक में देवली, सीकर में खंडेला, रोहिल, बूंदी में हिंडोली, भीलवाड़ा में जाहजपुर, भुंगास और नए स्टोर डूंगरपुर, किशनगढ़, बांसवाड़ा में पाए जाते हैं।

21. कोयला

तारशरी युग के कोयले की लिग्नाइट किस्म राजस्थान में पाई जाती है। कोयले के भंडार के मामले में तमिलनाडु के बाद राजस्थान का दूसरा स्थान है। राजस्थान में और उत्पादन में सबसे अधिक कोयला भंडार के साथ बाड़मेर जिले में पहले स्थान पर है। बाड़मेर में, बीकानेर में कपरडी, जालिया, गिरल, कसनू, गुढ़ा, पलाना में, नागौर में बारसिंगार, चनेरी, बिठानुक, पनेरी, गंगा-सरोवर और सोनारी, मेदतारोड, नागियार में कोयले का उत्पादन किया जाता है।

22. प्राकृतिक गण

राजस्थान का पहला स्टोर जैसलमेर के घोटारू में मिला था। जैसलमेर में घोटारू (मीथेन + हीलियम), मनिहारी टिब्बा (प्राकृतिक गण), डांडेवाला, तनोट, गमना, रामगढ़, कमलीवाल भंडार पाए जाते हैं। जैसलमेर के रामगढ़ में एक गैस आधारित बिजली संयंत्र स्थापित किया गया है। विभिन्न कंपनियां राजस्थान में प्राकृतिक गैस की खोज कर रही हैं।

शेल इंटरनेशनल - बाड़मेर सांचैर

फीनिक्स प्रवासी - शाहगढ़

ERROR OIL - बीकानेर नागौर

RELIANCE PERTOLIUM - बघेरवाला

www.ignited.in

23. खनिज तेल

खनिज तेल तलछटी चट्टानों में पाया जाता है। राजस्थान में बाड़मेर में तेल का सर्वाधिक भंडार है। बाड़मेर में गुड़ामालानी, कोसलू, सिंधरी, मग्गा की धानी, हाथी की धानी प्रमुख उत्पादन क्षेत्र हैं। अन्य उत्पादक क्षेत्र सदुवाला, तनोट, मनिहारी टिब्बा, देवल, जैसलमेर, बीकानेर में बाघेवाला, हनुमानगढ़ में तुवारीवाला और नानूवाला हैं।

राजस्थान में खनिज विकासः

1979 ई। में राजस्थान में खनिज विकास निगम की स्थापना। राजस्थान राज्य टंगस्टन विकास निगम लिमिटेड में 22 नवंबर 1983 को स्थापित किया गया है। राज्य की पहली खनिज नीति 1978 में तत्कालीन मुख्यमंत्री भैरो सिंह शेखावत के अधीन बनाई गई थी। 1991 में दूसरी खनिज नीति बनाई गई। राजस्थान के खान और भू-विज्ञान निदेशालय ने राज्य में खनन क्षेत्र को विकसित करने के लिए "खनिज आधारित उद्योगों के लिए पर्यावरण के अनुकूल और उपयुक्त वातावरण विकसित करने के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता, 2006 ई। सर्वोच्च प्राथमिकता" शुरू की। राजपुरा-दरीबा-बामनिया कला क्षेत्र को भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण विभाग द्वारा "भूवैज्ञानिक पार्क" के रूप में संरक्षित और संरक्षित किया गया है। राजस्थान की सबसे बड़ी खदान जावर खदान (उदयपुर) में है। राजस्थान में, पहली संगमरमर नीति अक्टूबर 1994 में घोषित की गई थी, और पहली ग्रेनाइट नीति 1991 ईस्वी थी। राजस्थान की नवीनतम संगमरमर नीति और ग्रेनाइट नीति की घोषणा 8 जनवरी 2002 को की गई। राजस्थान के खनिज विभाग ने 15 अगस्त 1999 को "विजन 2020" घोषित किया। राजस्थान स्टेट माइंस एंड मिनरल्स लिमिटेड की स्थापना 2003 में की गई थी। राजस्थान में नई खनन नीति को 28 जनवरी, 2011 को राज्य मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित किया गया था।

राजस्थान पूरे देश में एकमात्र उत्पादक है, जो जैस्पर, गार्नेट जैम और वोल्स्तेनाइट है। राजस्थान पूरे देश में जैस्पर, गार्नेट जैम और वोलेस्टोनाइट का एकमात्र उत्पादक है। राज्य की नई खनिज नीति 4 जून 2015 को जारी की गई थी।

राजस्थान राज्य खनिज विकास निगम

27 सितंबर 1979 को कंपनी अधिनियम 1956 के तहत स्थापित, इसे 20 फरवरी 2003 को राजस्थान स्टेट माइंस एंड मिनरल्स लिमिटेड के साथ मिला दिया गया था।

राजस्थान राज्य खान एवं खनिज लिमिटेड

इसकी स्थापना 1948 में बीकानेर जिप्सम लिमिटेड नाम से हुई थी। 1974 में इसका नाम बदलकर राजस्थान स्टेट माइंस एंड मिनरल्स लिमिटेड कर दिया गया था।

इसके मुख्य कार्य

उदयपुर के झामड़ - कोटरा में रॉक फॉस्फेट का कार्य

गिरल बाड़मेर में 125 मेगावाट बिजली संयंत्र की स्थापना

जैसलमेर के बाराबाग में 106.3 मेगावाट बिजली इकाई की स्थापना

राजस्थान स्टेट माइंस एंड मिनरल्स लिमिटेड और नेशनल केमिकल एंड फ़र्टिलाइज़र ने चित्तौड़ गढ़ में 425 करोड़ रुपये की लागत से राजस्थान नेशनल केमिकल एंड फ़र्टिलाइज़र लिमिटेड की डीएपी उर्वरक फैक्ट्री स्थापित की है।

महत्वपूर्ण तथ्य:-

- बाड़मेर के जोगसरिया गांव में ब्रिटन की केयर्न एनर्जी कंपनी द्वारा खोजे गए तेल के कुएं को केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्रालय ने पहला नाम मंगला दिया था।
- मंगला प् से 1.5 किमी। की दूरी पर खोदा गया दूसरा कुआं, 26 जनवरी 2004 को मंगला -2 नाम दिया गया था।
- मंगला, ऐश्वर्या, सरस्वती, विजया, भाग्यम, राजेश्वरी, कामेश्वरी, गुढ़ा, बाड़मेर-सांचोर बेसिन के तेल क्षेत्र हैं।
- केयर्न एनर्जी कंपनी को गुड़ामालानी तहसील के पास नागर गांव में और महिलाओं के मामले में तेल जमा मिला है।
- नगर गाँव के पास खोदे गए कुएँ का नाम राजेश्वरी है। यह मंगला पहले से 75 किमी दूर है। यह मुश्किल है।
- गुढ़मनी तहसील के झुंड गाँव में तीसरे कुएँ की खुदाई की जा रही है।

- मंगला के बाद, बाड़मेर में पाए जाने वाले तेल के भंडार को 4 अप्रैल 2005 को विजया और भाग्य के रूप में जारी किया गया था।
- फरवरी 2004 में, एस्सार ऑयल ने गंगानगर के बंजबायला और हनुमानगढ़ के नानूवाला में पेट्रोलियम भंडार की पुष्टि की।
- बीकानेर के बचेवाला ब्लॉक में देवी तेल के भंडार पाए गए हैं।
- ओआईसीएल और वेनेजुएला की एक कंपनी मिलकर इस स्टोर का फायदा उठाएंगी।
- ओ। आईसीएल ने बागेवाला में मिनी रिफाइनरी और उर्वरक संयंत्र स्थापित करने की योजना बनाई है।
- राजस्थान में O.N.G.C. और I.O.C. बाड़मेर में संयुक्त रूप से एक तेल रिफाइनरी स्थापित करने की योजना है।
- मुंद्रा (कच्छ) से भटिंडा के बीच निर्माणाधीन कच्चे तेल की पाइपलाइन बाड़मेर, जोधपुर, नागौर, बीकानेर, हनुमानगढ़, गंगानगर से होकर गुजरेगी। जोधपुर में इसकी
- पम्पिंग स्टेशन बनाया गया है।
- जामनगर - लोनी एल.पी.पी.गंस पाइपलाइन जी. ए. आई.एल. रखी है लोनी कांडला (जामनगर, गुजरात) के रास्ते उत्तर प्रदेश जाएगी।
- इसके लिए आबूरोड (सिरोही) और गोदरी गांव (अजमेर) में बूस्टर लगाए गए हैं। इस कारण एल.आर. अजमेर और जयपुर में पी. जी. की आपूर्ति की जाएगी।
- हजीरा (गुजरात), बीजापुर (मध्य प्रदेश), जगदीशपुर (उत्तर प्रदेश) एच.बी. जे। गैस पाइपलाइन अंटा (बर्रा) गैस संयंत्र और गदेपन (कोटा) उर्वरक संयंत्र और सिमकोट ग्लास फैक्ट्री (कोटा) को गैस की आपूर्ति करती है।
- जयपुर पी. जी. के पास राजवास गाँव में एल.ए. दुनिया की सबसे लंबी पाइपलाइन बिछाई जा रही है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त अध्ययन से यह स्पष्ट है कि सरकार ने ऐसी खनन नीतियां बनाई थीं जिनके कारण राजस्थान खनिज उद्योग के विभिन्न क्षेत्रों में स्वावलंबी बन गया। उदारीकरण, वैश्वीकरण और निजीकरण के प्रचार ने विदेशी पूंजी निवेश के साथ-साथ आधुनिक तकनीक को भारत में लाने में बहुत मदद की है। निजी उद्योगों को उद्योगों के आंतरिक क्षेत्र में प्रवेश करने की अनुमति देकर, खनिज उद्योग क्षेत्र में भी तेजी से प्रतिस्पर्धी प्रगति हुई है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. राजस्थान का भूगोल, प्रोफेसर एच एस शर्मा, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
2. राजस्थान की अर्थव्यवस्था, प्रोफेसर लक्ष्मी नारायण नाथूराम, कॉलेज बुक हॉउस, जयपुर
3. राजस्थान का भूगोल, डॉ हरिमोहन सक्सेना, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
4. राजस्थान सुजस, त्रिमासिक पत्रिका, राजस्थान सरकार, जयपुर
5. राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास व विनियोग निगम लिमिटेड (RIICO)
6. सूचना एवं जन संचार प्रौद्योगिकी विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर
7. राजस्थान खनिज विकास निगम, जयपुर।
8. खान एवं पर्यावरण विभाग, राजस्थान सरकार।

Corresponding Author

Dr. Jagphool Meena*

Lecturer, Department of Geography, Government Post-Graduation College, Rajgarh, Alwar, Rajasthan

www.ignited.in